BEST PRACTICE – 1

Mentor–Mentee

Mentor–Mentee प्रणाली द्वारा विद्यार्थी सर्वांगीण विकास

उद्देश्य

- विद्यार्थियों को शैक्षणिक, व्यक्तिगत एवं करियर मार्गदर्शन प्रदान करना
- कमजोर, पिछड़े एवं प्रथम पीढ़ी के शिक्षार्थियों की पहचान कर सहयोग करना
- ड्रॉपआउट दर को कम करना एवं उपस्थिति बढ़ाना
- छात्रों में आत्मविश्वास, अनुशासन एवं लक्ष्य निर्धारण की क्षमता विकसित करना

आचार्य नरेंद्र देव किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बभनान, गोण्डा एक ग्रामीण क्षेत्र का प्रमुख उच्च शिक्षण संस्थान है। यहाँ अध्ययनरत अधिकांश विद्यार्थी ग्रामीण, कृषक एवं आर्थिक रूप से कमजोर पृष्ठभूमि से आते हैं। ऐसे विद्यार्थियों को अकादमिक के साथ-साथ भावनात्मक एवं करियर मार्गदर्शन की विशेष आवश्यकता होती है। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए महाविद्यालय द्वारा Mentor–Mentee प्रणाली को एक प्रभावी Best Practice के रूप में अपनाया गया है।

प्रक्रिया

- महाविद्यालय में प्रत्येक शिक्षक को 20–30 विद्यार्थियों का Mentor नियुक्त किया गया है।
- शैक्षणिक सत्र के प्रारंभ में Mentor–Mentee सूची विभागवार तैयार की जाती है।
- प्रत्येक सेमेस्टर/सत्र में न्यूनतम दो बैठकें आयोजित की जाती हैं।
- मेंटर द्वारा विद्यार्थियों की उपस्थिति, आंतरिक मूल्यांकन, व्यवहार एवं व्यक्तिगत समस्याओं पर चर्चा की जाती है।
- कमजोर विद्यार्थियों को रेमेडियल क्लास, अतिरिक्त मार्गदर्शन एवं अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराई जाती है।
- छात्रवृत्ति, उच्च शिक्षा, प्रतियोगी परीक्षाओं एवं रोजगार के अवसरों की जानकारी दी जाती है।
- प्रत्येक बैठक का विवरण Mentor Register एवं विभागीय रिकॉर्ड में लिखा जाता है।

परिणाम

- विद्यार्थियों की उपस्थिति में निरंतर सुधार हुआ है।
- परीक्षा परिणामों में उत्तरोत्तर प्रगति देखी गई है।
- ड्रॉपआउट दर में कमी आई है।
- छात्रों में संवाद कौशल, आत्मविश्वास एवं अनुशासन का विकास हुआ है।
- विद्यार्थियों से प्राप्त फीडबैक सकारात्मक रहा है।

समस्याएँ:

- प्रारंभ में कुछ छात्रों की झिझक
- शिक्षकों के समय प्रबंधन की चुनौती

संसाधन:

- अनुभवी शिक्षक
- काउंसलिंग कक्ष
- Mentor Register एवं फीडबैक फॉर्म

BEST PRACTICE – 2

ICT Enabled Teaching–Learning

ICT Enabled Teaching–Learning एवं E-Learning Support System

उद्देश्य

- शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी, रोचक एवं आधुनिक बनाना
- डिजिटल संसाधनों के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना
- छात्रों में तकनीकी दक्षता एवं डिजिटल साक्षरता का विकास करना

डिजिटल युग में उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए ICT आधारित शिक्षण आवश्यक हो गया है। ग्रामीण क्षेत्र में स्थित होने के बावजूद महाविद्यालय द्वारा तकनीक-सहायित शिक्षण को अपनाकर शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार का प्रयास किया जा रहा है।

प्रक्रिया

- स्मार्ट क्लासरूम, प्रोजेक्टर एवं कंप्यूटर का उपयोग कर शिक्षण कार्य किया जा रहा है।
- शिक्षकों द्वारा PPT, वीडियो लेक्चर एवं डिजिटल कंटेंट का प्रयोग किया जाता है।
- WhatsApp एवं Google Classroom के माध्यम से अध्ययन सामग्री साझा की जाती है।
- ऑनलाइन क्विज़, असाइनमेंट एवं आंतरिक मूल्यांकन किया जाता है।
- ई-लाइब्रेरी एवं ओपन एजुकेशनल रिसोर्स का उपयोग छात्रों को कराया जाता है।

परिणाम

- छात्रों की कक्षा में सक्रिय भागीदारी बढ़ी है।
- विषयवस्तु की समझ में सुधार हुआ है।
- छात्रों में डिजिटल टूल्स के उपयोग की क्षमता विकसित हुई है।
- परीक्षा परिणामों एवं फीडबैक में सकारात्मक प्रभाव दिखाई दिया है।

समस्याएँ:

- कुछ छात्रों की प्रारंभिक डिजिटल साक्षरता की कमी
- नेटवर्क संबंधी समस्याएँ

संसाधन:

- कंप्यूटर, प्रोजेक्टर
- इंटरनेट कनेक्टिविटी
- प्रशिक्षित शिक्षक